वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में
संत साहित्य
की प्रासंगिकता

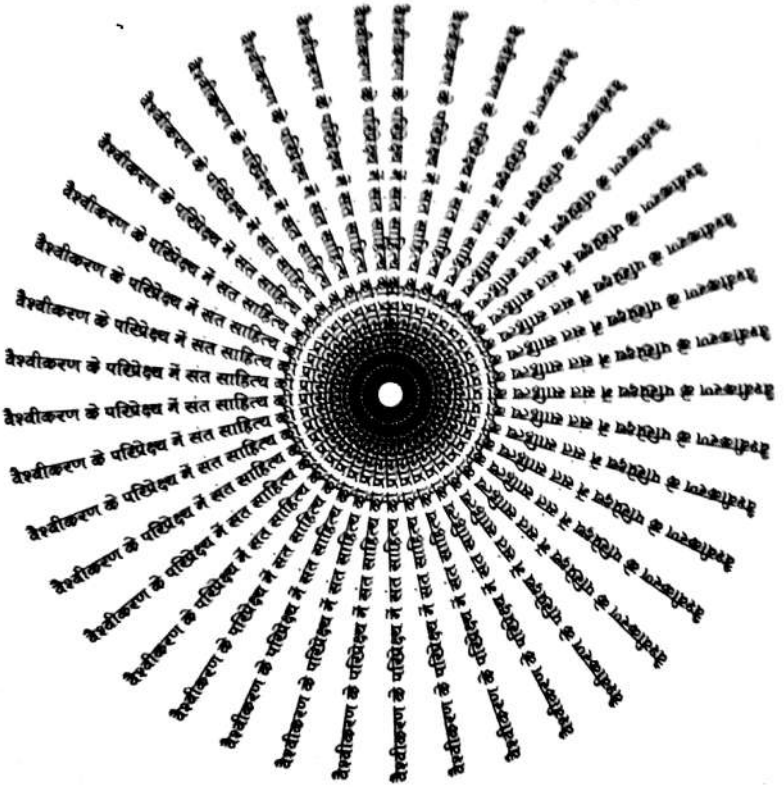

सम्पादक
डॉ. अपर्णा पाटील
डॉ. विजयकुमार वैराटे
डॉ. मजीद शेख
प्रा. अर्जुन मोरे

Scanned by CamScanner

ISBN	:	978-93-80760-52-0
मूल्य	:	₹ 1195/-
पुस्तक	:	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता
सम्पादक	:	डॉ. अपर्णा पाटील, डॉ. विजयकुमार वैराटे डॉ. मजीद शेख, प्रा. अर्जुन मोरे
©	:	सम्पादक
संस्करण	:	2017 ई.
प्रकाशक	:	अतुल प्रकाशन 57 पी, कुंज विहार II यशोदा नगर, कानपुर-208011
सम्पर्क	:	0512-2633004
ई-मेल	:	atulprakashan@gmail.com
शब्द सज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर

Vaishwikaran Ke Pariprekshya Me Sant Sahitya Ke Prasangikta
Ed. by : Dr. A. Patil, Dr. V. Vairate, Dr. M. Shaikh, Prof. A. More
Price : Rs. One Thousand One Hundred Ninety Five Only

Scanned by CamScanner

13 शेख फरीद की वाणी में पूर्ण मानव (इंसानुल कामिल) की धारणा — 90
जसदीप मोहन

14 वैश्वीकरण की चुनौती और कबीरदास — 99
डॉ.बाबासाहेब कोकाटे

15 वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भक्तिकालीन संत साहित्य की प्रासंगिकता — 103
प्रो. मीनाक्षी श्रीवास्तव

16 हिंदी साहित्य में मानवीय चेतना की अलख जगाता भारतीय संत साहित्य — 108
डॉ. विशाला शर्मा

17 वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में मध्यकालीन संत साहित्य की प्रासंगिकता (गोस्वामी तुलसीदास के विशेष संदर्भ में) — 113
येडले दत्तात्रय लक्ष्मण

18 वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में मध्यकालीन संत साहित्य में मानवीय मूल्य — 120
डॉ. सुलक्षणा जाधव–घुमरे

19 वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के साहित्य का मूल्यांकन — 124
डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे

20 संतों की विज्ञान निष्ठा : वर्तमान संदर्भ में — 129
डॉ. संध्या मोहिते

21 वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कबीर साहित्य की प्रासंगिकता — 134
डॉ. बाबासाहेब माने

22 संत तुलसीदास के काव्य में लोकनीति और मर्यादावाद आज के संदर्भ में — 140
डॉ. कुसुम राणा

23 संत कबीर एवं तुकाराम की समसामयिक जीवन में प्रासंगिकता — 144
प्रा. डॉ. मदीना सिकंदर शेख,
प्रा. डॉ. जायदा सिकंदर शेख

Scanned by CamScanner

21

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कबीर साहित्य की प्रासंगिकता

डॉ. बाबासाहेब माने

वैश्वीकरण के युग में दुनिया एक 'ग्लोबल विलेज' की तरह लगने लगी है । वैश्वीकरण के कारण दुनिया में बहुत–से परिवर्तन हो चुके हैं । संचार माध्यमों की प्रचुरता, तकनीकी का बढ़ता प्रचलन और व्यापार की तेज चहल–पहल के परिणाम स्वरुप दुनिया एक गाँव हो चुकी है। भारत के किसी एक कोने में घटित घटना एक मिनट के अंदर पूरे विश्व में फैल जाती है । विश्व का कोना–कोना इससे परिचित हो जाता है । परिणाम में प्रतिकियाएँ भी तुरंत ही परस्पर पहुँच जाती हैं। वैश्वीकरण का यह युग मनुष्य से जुड़ी हर चीज में परिवर्तन लाने लगा है। ऐसे में मनुष्य अपने आप को तेज गति से अपडेट करता जा रहा है । दुनिया के विविध साधनों, अविष्कारों और खबरों से वह परिपूर्ण होता जा रहा है । मुक्त व्यापार का विस्तार बढ़ने लगा है। सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति आ चुकी है। मनुष्य के पास भौतिक सुख–साधनों की रेल–चेल बढ़ गई है। वह दुनिया के हर बदलाव की जानकारी रखने की कोशिश करने लगा है और समय के साथ कदम मिलाकर चलने लगा है। यह मनुष्य के विकास की पहचान है। परंतु इस भागादौड़ी में मनुष्य अपने जीवन के असली रुप को ही भूलता जा रहा है। यह वैश्वीकरण का एक कमजोर पक्ष माना जा सकता है। वैश्वीकरण मनुष्य जीवन के विकास के लिए आवश्यक है, परंतु मनुष्य उसका दुरुपयोग ही ज्यादा करता नजर आ रहा है। मुक्त व्यापार की वजह से दुनिया के बाजार में हर एक चीज आसानी से मिल रही है । ऐशो–आराम की चीजों को पाने के लिए मनुष्य जी–तोड़ मेहनत कर रहा है। उन्हें प्राप्त करना ही उसके जीवन लक्ष्य बन गया है। परंतु 'मानवता' या 'वसुधैव कुटुम्बकम' के लिए जिन चीजों एवं मूल्यों की आवश्यकता होती हैं , उन्हीं चीजों एवं मूल्यों को मनुष्य भूलता जा रहा है। जबकि यें चीजें एवं मूल्य केवल उसके जीवन के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण धरती पर पलनेवाले सभी ज्ञात–अज्ञात जीवों, पेड़–पौधों और वनस्पतियों के अस्तित्व के लिए बहुत ही आवश्यक हैं। अतः इन्हें भूलना या उनका

Scanned by CamScanner

ह्रास होना दुनिया की बेहतरी के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। ऐसे में संत साहित्य में व्यक्त विचार वर्तमान समाज में मानवता को प्रज्ज्वलित करने तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को सफल बनाने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। मध्यकालीन संत साहित्य तो मानवता की भावना से ओतप्रोत रहा है। उसमें हर युग के मानव समाज में जीवनावश्यक मूल्यों को पुनः रोपित करने की आकूत क्षमता निहित है। इसलिए यहाँ पर मध्यकालीन संत कवि 'कबीर' के साहित्य की वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता विचार किया जा रहा है ।

कबीर निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि माने जाते हैं । उन्होंने अपने विचारों को केवल मौखिक रुप से प्रकट किया है । उन्होंने कोई साहित्य नहीं लिखा । चुँकि वे पढ़े–लिखे नहीं थे और लिखने की कला भी उन्हें अवगत नहीं थी । उनके शिष्य धर्मदास ने उनके भावों एवं विचारों को "बीजक" नामक ग्रंथ में संकलित किया है । कबीर के पास दुनिया का वह गहन अनुभव था, जिसमें वास्तविकता कुट–कुट कर भरी थी और संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए जिन बातों की आवश्यकता होती है, वे अधिकांश बातें कबीर ने समाज से ग्रहण की थी । इसलिए उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से समाज को विविध आंडबरों, मिथ्याचारों, बुरी आदतों से अवगत किया। ताकि समाज अपनी असलियत को पहचाने और सही रास्ते पर चलकर अपने जीवन को सार्थक करे । आज हम देखते हैं कि वैश्वीकरण का प्रभाव पूरी दुनिया पर छाया हुआ है । यह प्रभाव धीरे–धीरे दुनिया पर अपनी पकड़ मजबूत करने लगा है । परिणाम में किसी एक देश का मनुष्य दूसरे देश के मनुष्य के रीति–रिवाजों, जीने की पद्धतियों, उनकी हलचलों के बारे में तुरंत पता करने लगा है । यह सबकुछ तकनीकी विकास की बदौलत संभव हो पाया है । दुनिया के किसी भी देश की जानकारी घर बैठे इंटरनेट के माध्यम से संगणक पर हासिल हो रही है । दुनिया के अनेक क्षेत्रों में विकास की रफ्तार तेज हो गई है। वैज्ञानिक क्षेत्र में तो मनुष्य ने अपनी कामयाबी का सबसे ऊँचा परचम लहराया है और आगे भी यह सिलसिला इसी तरह से जारी रहेगा, इसमें शक करने की कोई गुंजाइश नहीं है। परंतु सवाल यह उठता है कि क्या केवल वैज्ञानिक विकास मनुष्य जीवन के कल्याण का एकमात्र साधन हो सकता है ? जब इस पर विचार शुरु हो जाता है तो ज्ञात होता है कि वैज्ञानिक प्रगति मनुष्य जीवन के कल्याण के लिए आवश्यक है, परंतु इस प्रगति के साथ ही मनुष्य के सोच में परिवर्तन लाना भी बहुत ही जरुरी है। वैज्ञानिक विकास के द्वारा मनुष्य जीवन का कल्याण कुछ हद तक संभव है। परंतु मनुष्य जीवन का अगर पूर्ण रुप से कल्याण साधना हो तो उसके लिए मानवता एवं वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को उसके मन में प्रज्ज्वलित करना भी जरुरी है। यह भावना सफल करने हेतु कबीर का साहित्य आज भी प्रासंगिक लगता है। अतः वर्तमान समाज को कबीर के विचारों को ग्रहण करके अमल में लाने की

Scanned by CamScanner

आवश्यकता है। ऐसा करने पर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना खुद–ब–खुद फलित हो जाएगी ।

वैश्वीकरण के कारण हर देश सिमटता जा रहा है। मुक्त व्यापार की वजह से एक देश में निर्माण चीज दूसरे देश में पहुँचने में देर नहीं लगती। परिणाम स्वरुप दुनिया के किसी भी देश में अन्य देशों की चीजें आसानी से मिलने लगी हैं। परंतु समकालीन समाज इन चीजों का सही इस्तेमाल करने की बजाए, गलत इस्तमाल ही अधिक कर रहा है। विज्ञान ने आत्मरक्षा एवं राष्ट्ररक्षा के लिए विविध शस्त्रास्त्रों का अविष्कार किया है। जिससे कि दुनिया में अमन एवं शांति का माहौल पैदा हो सके, परंतु चंद आतंकवादी संगठन अपना वर्चस्व स्थापित करने लिए इन शस्त्रास्त्रों का दुरुपयोग ही अधिक मात्रा में करते दिखाई देने लगे हैं । ये संगठन अनेक निरापराध एवं निष्पाप लोगों का खूलेआम कत्ल कर रहे हैं और सोशल मीडिया या इंटरनेट के माध्यम से कत्लेआम का प्रचार–प्रसार करने लगे हैं । इसका जीता–जागता उदाहरण आयएसआयएस नामक संगठन है । इस संगठन ने अब तक शेकडों निरापराध लोगों को मौत के घाट उतार दिया है और सोशल मीडिया तथा इंटरनेट का प्रयोग करके कत्ल की घटनाओं के वीडियों विविध साइटों पर अपलोड किए हैं । ताकि लोगों में ड़र एवं खौफ पैदा हो। इतना ही नहीं, वह इन साइटों का प्रयोग करके मुसलमानों को खुदा का वास्ता देता है या उनके सामने जिहाद की बात छेडकर उन्हें भड़काता है। ताकि अधिक से अधिक युवा इसमें शामिल हो जाए और वह अपने मनसूबों में कामयाब हो जाए। दुनिया में केवल यही एकमात्र संगठन ऐसा नहीं है, जो इस तरह की गतिविधियों को अंजाम देने लगा है , बल्कि ऐसे तमाम संगठन दुनिया के अनेक देशों में कार्यरत हैं। जों धर्म की आड लेकर निरापराधों को खुलेआम मार रहे हैं। आयएसआय जैसे संगठन ने भारत में भी अपने पर फैलाने शुरु किए हैं । आए दिन जम्मु–कश्मीर में अलगाववादियों की तरफ से पाकिस्तान एवं आय एस आय के झंडे लहराए जाने लगे हैं । भारत के कई मुस्लिम युवा धार्मिक कट्टरता के चंगुल में फँसकर इन गतिविधियों में शामिल होने की कोशिश करने लगे हैं । इन संगठनों के पास ना कोई संवेदनशीलता है और ना ही मानवता की भावना। ऐसे में कबीर के मानवतावादी विचार उक्त गतिविधियों में शामिल होने जाने वाले सभी युवाओं को जीवन का असली अर्थ क्या है ?इसका ज्ञान देने के लिए आज भी प्रासंगिक हैं । कबीर के विचारों में ऐसी ताकतों का मन परिवर्तन करने की आकूत क्षमता निहित है। कबीर कालीन युग में भी धर्म , वंश, जाति आदि के नाम पर हिंदू और मुसलमानों के बीच हमेशा दंगे फसाद हुआ करते थे । हिंदू अपने देवताओं को श्रेष्ठ समझते थे और मुसलमान अपने खुदा या अल्हा को । इसी होड़ा–होड़ी में हिंदू और मुसलमानों में परस्पर टकराव शुरु था । अतः कबीर ने इस टकराव को सही रास्ता दिखाने का प्रयास करते हुए कहा था –

Scanned by CamScanner

"मौको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में,
ना मैं देवल, ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में ।
ना तो कौनो किया कर्म में, नहीं योग बैराग में ,
खोजी होय तो तरतै मिलिहौं, पलभर की तलाश में।।"[1]

अर्थात् ईश्वर ना मंदिर में रहता है और अल्हा ना ही मस्जिद में वास करता है। वह तो हर एक जीव में बसा हुआ है। बस उसे तलाशने की जरुरत है। अतः अल्हा या ईश्वर के नाम पर मासूम लोगों को मारना या जिहाद के नाम पर अपने ही भाईयों का खून करना कहाँ का धर्म है ? अल्हा या ईश्वर ऐसे कुकर्मों से कैसे प्रसन्न हो सकता है ? चुँकि वह तो हर जीव एवं वनस्पतियों में बसा हुआ है। अगर हम अपने ही समान दूसरे जीवों की हत्या करेंगे तो यह एक तरह से ईश्वर या अल्हा की हत्या करने जैसा है ? अतः अल्हा या ईश्वर को अगर तलाश करना है तो हर एक जीव में तलाश कीजिए । उन जीवों के दुःख–दर्दों को दूर करने की कोशिश कीजिए । आपको ईश्वर या अल्हा का रुप उन जीवों में महसूस होगा। उसे ना किसी मंदिर में ढूँढने की आवश्यकता है या ना ही किसी मस्जिद में। अतः आज दुनिया में धर्म के नाम पर जिस प्रकार का डरावना माहौल पैदा हो गया है। उससे ऐसा लगता है कि कबीर के विचारों की घुट्टी कुकर्म करने वालों का मन परिवर्तन के लिए आज भी जरुरी लगती है।

आज के वैश्वीकरण के युग में मनुष्य प्रगति के अनेकानेक शिखर पादक्रांत कर रहा है । यह समस्त मानव जाति के विकास के लिए राहत देने वाली बात है। परंतु दूसरी ओर उसमें अंधश्रद्धा , धार्मिक संकीर्णता, जातिगत भेदभाव की प्रवृत्ति आज भी कायम है । वह इन परिधियों को तोड़कर बाहर नहीं आ पाया है। उसमें आज भी काला–गोरा, ऊँच–नीच, संवर्ण–दलित, हिंदू–मुसलमान, सीख–इसाई आदि तरह का भेदभाव दिखाई देता है। जबकि ऐसी संकीर्ण मानसिकता से मावनता की भावना कभी भी साकार नहीं हो सकती। हिंदुस्तान में आज भी जाति एवं धर्म के नाम पर भेदभाव दिखाई देता है। परिणाम स्वरुप धर्मों–धर्मों में परस्पर घृणा, तिरस्कार तथा वैमनस्य कायम है। इन तत्वों को कभी राजनीति की ओर से खाद–पानी मिलता है तो कभी धर्म के ठेकेदारों से हवा–पानी मिलता है। ऐसा ही माहौल कबीर के जमाने में भी था । इसलिए उन्होंने कहा था–

"जाति–पाति पूछे नहीं कोई,
हरि को भजै सो हरि का होई।"[2]

अर्थात् ईश्वर निर्गुण निराकार है । वह घट–घट में समाया हुआ है । वह स्वयं की भक्ति के लिए ना किसी आदमी की जाति पूछता है और ना ही किसी का धर्म । उसने कभी भी किसी एक ही जाति के लोगों भक्ति करने का ठेका नहीं दिया है और ना ही किसी अन्य जाति के लोगों को अपनी भक्ति करने से

Scanned by CamScanner

वंचित रखा है । अतः जो आदमी सच्चे मन से उसकी भक्ति करेगा । वह सहज रुप से उसका हो जाएगा । वैश्वीकरण के जमाने में दुनिया ने एक तरफ से तो भरपूर विकास किया है । वह चाँद पर चली गई है । मंगल ग्रह पर भी हवा–पानी की तलाश कर रही है । ताकि मानव आबादी वहाँ भी अपना गुजर–बसर कर सके। परंतु दूसरी तरफ आज भी कई मंदिरों , मस्जिदों एवं चर्चों में दूसरे धर्म एवं जाति के लोगों के आने पर उनके साथ दुर्व्यवहार करती है । उन्हें दुत्काराती है। उन पर अन्याय–अत्याचार करती है। अतः ऐसा विकास या वैश्वीकरण किस काम का ? जो अन्यों को सताता हो , उन पर अन्याय–अत्याचार करता हो। भारत में अब तक की अनेक सरकारों ने ऐसे कई कानून लागू किए हैं, जो भेदभाव को मिटाने में कुछ हद तक जरुर कारगर साबित हो चुके हैं। फिर भी भारत में जाति भेद संपूर्णतः से नहीं मिट सका है। आज भी कई जाति–धर्मों के लोगों में परस्पर भेदभाव दिखाई ही देता है । भले ही ऊपरी रुप से लोंग भेदभाव न करते हों , परंतु अंदर–ही–अंदर भेदभाव की जड़ें उनमें आज भी कायम हैं। इन जड़ों को उखाड़ फेंकने के लिए कबीर के उक्त विचार प्रासंगिक प्रतीत होते हैं ।

तकनीकी प्रगति की बदौलत लगभग प्रत्येक मनुष्य के पास मोबाइल आ चुका है । अतः इस साधन के कारण मनुष्य एक दूसरे साथ चंद सेंकद में ही जुड़ने लगा है । संगणक के कारण भी मनुष्य दुनिया के तमाम लोगों के साथ तुरंत जुड़ने लगा है और अपने आप को अपडेट करने की कोशिश करने लगा है । यात्रा साधानों का विकास भी तेजी से होने लगा है । इसी कारण मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान आसानी से एवं तुरंत ही पहुँचने लगा है । अतः ज्ञान–विज्ञान के इन विविध साधनों से वर्तमान मनुष्य के ज्ञान में निरंतर वृद्धि होने लगी है। परिणाम स्वरुप मनुष्य का ज्ञान बढ़ गया है। वह अपने आपको विद्वान कोटि में समाहित करने लगा है । परंतु मानवता के लिए अथवा वसुधैव कुटुम्बकम की सफलता के लिए जिस निश्छल प्रेम की जरुरत होती है । उसे वह पैरों तले रौंदने लगा है। इसी वजह से स्वार्थ, ईर्ष्या, तिरस्कार , घृणा, असंवदेनशीलता, निर्घृणता आदि दुर्गणों का प्रादुर्भाव बढ़ गया है। अतः कबीर ने अपने समय के ऐसे अनेक विद्वानों को (जो विविध ग्रंथ पढ़कर अपने आप को विद्वान समझते थे, परंतु जिनमें निश्छल प्रेम का अभाव था।) कड़ी फटकार लगाई थी –

"पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ , पंडित भयान कोय,
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।"[3]

अतः समकालीन युग में जो लोंग अपने आप को बड़े ही विद्वान समझते हैं और खुद को ही धर्म, शिक्षा, राजनीति, व्यापार आदि के ठेकेदार समझते हैं । ऐसे लोगों में अगर प्रेम, भाईचारा , सवंदेना, सहिष्णुता, मानवता, विश्वास आदि जीवनावश्यक मूल्य न हो तो उनकी विद्वत्ता किस काम की ?ऐसे लोगों से कभी भी जनकल्याण सिद्ध नहीं हो सकता । उनके ज्ञान से कभी भी दुनिया का भला

Scanned by CamScanner

नहीं हो सकता। वें कभी भी और किसी भी काल एवं परिस्थिति में विद्वान नहीं कहलाए जा सकते। आज भी कई मानव समुदाय स्वयं को धर्म के ठेकेदार एवं धर्मरक्षक समझने लगे हैं । वें अपनी संकुचित मानसिकता को अन्यों पर थोपने की कोशिश करने लगे हैं । खुद को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन समझना उनका पेशा बना गया है । परंतु इससे उनकी श्रेष्ठता कभी सिद्ध नहीं हो सकती और ना ही कोई उनके विचारों को स्वीकार कर सकता है। अतः दुनिया में विश्वबंधुत्व कायम करना हो तो प्रेम का निश्चल प्रवाह सभी मानव समुदायों के हृदय में प्रवाहित करना होगा । केवल बड़े–बड़े ग्रंथ पढ़ने से या ज्ञान–विज्ञान की किताबें पढ़ने से कुछ नहीं होता । इन ज्ञान–विज्ञान के साधनों के साथ–साथ दुनिया को प्यार की मजबूत डोर में बाँधने की भी कला सीखनी होगी। समाज के हर हिस्से एवं क्षेत्र में प्यार, विश्वास, भाईचारा, सद्भाव, मानवता आदि मूल्यों को स्थापित करना होगा। बाजार के विस्तार का उपयोग व्यापार के साथ–साथ आत्मीय रिश्तों एवं जीवनगत मूल्यों को मजबूती से प्रगाढ़ करने के लिए करना होगा । तकनीकी साधनों से मानवीय मूल्यों को वृद्धिंगत करना होगा । तभी दुनिया में अमन एवं शांति प्रस्थापित हो सकती है और 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना साकार हो सकती है । इसलिए कबीर के विचार समकालीन समाज के लिए उतने ही प्रासंगिक लगते हैं, जितने कि तत्कालीन समाज के लिए थे।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मध्यकालीन सामाजिक माहौल को सही रास्ते पर ले जाने के लिए कबीर ने अपनी वाणी से जो विचार व्यक्त किए थे। वें विचार जितने तत्कालीन समाज के लिए प्रासंगिक थे, उतने ही आज के वैश्वीकरण के जमाने के लिए भी प्रासंगिक लगते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. युग पुरुष कबीर – डॉ. रामलाल वर्मा, डॉ. रामचंद्र वर्मा, प्रथम संस्करण : 1978 भारतीय ग्रंथ निकेतन , 133, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली।
2. भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम – संपाः डॉ. इंगळे, डॉ. जाधव, डॉ. रोडे, प्रथम संस्करण : 2009 शैलजा प्रकाशन, 57–पी, कुंज विहार–2, यशोदा नगर, कानपुर–208011

Scanned by CamScanner

'मुक्त बाजार' के वर्तमान परिप्रेक्ष्य का असर हमारे निजी और सार्वजनिक जीवन के सभी क्षेत्रों पर देखा जा रहा है। भाषा, संस्कृति और साहित्य भी उससे अछूते नहीं हैं। वर्तमान वैश्वीकरण की प्रवृत्ति सामाजिकीकरण की है। हर क्षेत्र में विविधता से संपन्न भारतीय समाज–जीवन पर उसका बहुत भारी प्रभाव देखा जा रहा है। उपभोक्तावादी सभ्यता के निर्मम आक्रमण से आज के सामाजिक जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। बाजार एक महासत्ता के रूप में जीवन के हर क्षेत्र पर अधिकार जमा चुका है। अभी हर चीज खरीदने और बेचने के लिए पैदा होती है। या कहना चाहिए हर पैदा होने वाली चीज बेचने और खरीदने के लिए ही है। यहाँ तक कि मनुष्य, सभ्यता, कला, सौंदर्य और मानवीय मूल्य भी क्रय–विक्रय की चीजों में तब्दील हुए हैं।

वैश्वीकरण की इस सर्वग्राही शक्ति का मुकाबला संत साहित्य कर रहा है। हमारी अपनी 'निजी' पहचान को सर्वग्राही निजीकरण में बनाया रखना है। यह काम हमारी भाषाओं का संत–साहित्य कर सकता है। यह काम करने की ताकत भारतीय संत–साहित्य में निश्चित रूप से है।

अतुल प्रकाशन
57–पी, कुंज विहार–2, यशोदा नगर, कानपुर– 208 011
Ph.: 0512-2633004 E-mail: atulprakashan@gmail.com

ISBN 978-93-80760-52-0
9 789380 760520 >
₹ 1195/-

Scanned by CamScanner